Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to include the sacred Shrimad Bhagvad Gita in school and college curriculum and also include in the Oaths Act, 1969 -laid.

श्री गोपाल शेट्टी (मुम्बई उत्तर): हिन्दू शास्त्रों में श्रीमदभागवद गीता का सर्वप्रथम स्थान है तथा यह भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। लोकप्रियता में इससे बढ़कर कोई दूसरा ग्रंथ नहीं है तथा विश्व में इसकी लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। गीता में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से धार्मिक सहिष्णुता की भावना को प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है। वस्तुत: इस ग्रंथ में सम्पूर्ण वेदों का सार निहित है। गीता की महत्ता को शब्दों में वर्णन करना असंभव है। यह स्वयं भगवान श्री कृष्ण के मुखारविंद से निकली है।

मनुष्य को अपने जीवन को सफल बनाने, हरेक तनाव से दूर रहने हेतु श्रीमदभागवद गीता को हृदय में धारण करना आवश्यक है। यह जीवन को सफल बनाने का एक कल्याणकारी मार्ग है। भारत हि नहीं विदेशों में भी गीता का बहुत प्रचार है। संसार की शायद ही ऐसी कोई सभ्य भाषा हो, जिसमें गीता का अनुवाद न हुआ हो।

उत्कृष्ट भावना का परिचायक होने के कारण गीता का सभी ग्रन्थों में सर्वोपरि स्थान है तथा इस पवित्र ग्रंथ के उपदेशों को सभी ने स्वीकार किया है। इसलिए यह किसी संप्रदाय विशेष का ग्रंथ नहीं है। पाश्चात्य विद्वान हंबाल्ट ने गीता से प्रभावित होकर कहा है कि "किसी ज्ञात भाषा में उपलब्ध ग्रन्थों में संभवत: सबसे अधिक सुंदर और दार्शनिक गीता विश्व की परम निधि है।"

अत: चूंकि, श्रीमदभागवद गीता में सभी धर्मों के ग्रन्थों का समावेश है और इसमें ईश्वर की वाणी निहित है, तथा यह ईश्वर का एक स्वरूप है। इसलिए, मेरा अनुरोध है कि विश्व प्रसिद्ध इस पवित्र ग्रंथ को देश के सभी विधालयों, कालिजों और तकनीकी/चिकित्सा संस्थानों के पाठ्यक्रमों में शामिल किए जाने के साथ-साथ शपथ अधिनियम-1969 की "धारा-6 शपथ और प्रतिज्ञान के प्रारूप में "ईश्वर की शपथ लेता हूँ" के स्थान पर "श्रीमदभागवद गीता की शपथ लेता हूँ" अंत: स्थापित किए जाने हेतु समुचित कार्यवाही की जाए।